UG- PROGRAMME

BA PART-2 PAPER-IV: History of Modern Asia (1839-2000)

UNIT-I Colonial Intervention and Expansion

(a) Colonialism in West Asia.

पश्चिम एशिया में उपनिवेशवाद

वास्तव में, पश्चिम एशिया से हमारा तात्पर्य उस क्षेत्र से है जो भारत से पश्चिम में स्थित है। और जिसे यूरोप तथा अमेरिकी लोग "**मध्यपूर्व**" के नाम से पुकारते हैं। इसमें तुर्की, लेबनान, सीरिया, इजराइल, जोर्डन, इराक, ईरान, सउदी अरब आदि देश सम्मिलित हैं।

नोट : "छात्रों के अध्ययन संबंधी सुविधा के लिए पश्चिम एशिया के देशों का भौगोलिक विवरण, मानचित्र पर पृष्ठ संख्या-02 में उद्धृत किया गया है।"

असल में, 19वीं शताब्दी के अंत तक रूस लगभग मध्य एशिया पर अपना नियंत्रण स्थापित कर चुका था। अब वह पश्चिम एशिया में स्थित देशों ईरान, अफगानिस्तान पर अपनी घुसपैठ अथवा प्रभाव बढ़ाने की कोशिश में था रूस के इस चाल को देखकर ब्रिटेन सावधान हो गया। इसकी मुख्य वजह ब्रिटिश साम्राज्यवाद का चमकता हीरा 'भारत' था। ब्रिटेन को यह लगा कि रूस यदि ईरान और अफगानिस्तान में पहुँच गया तो उसका 'भारतीय साम्राज्य' खतरे में पड़ जायेगा। ऐसे में ब्रिटेन का चौकना होना जायज था। ब्रिटेन यहीं नहीं रुका, अब उसने इन देशों (ईरान और अफगानिस्तान) में अपना प्रभाव बढ़ाने की रणनीति बनाई। ब्रिटेन ने इन देशों में अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए बैंक भी खोले। ऐसा रूस ने भी किया। लेकिन दोनों साम्राज्यवादी शक्तियों (ब्रिटेन तथा रूस) के बीच स्थिति अस्पष्ट ही रही। दिलचस्प तथ्य है कि दोनों साम्राज्यवादी शक्तियां इस अस्पष्टता से बाहर निकलना चाहती थीं। सो इन दोनों साम्राज्यवादी शक्तियों ने 1907 में एक समझौता कर लिया।

Scanned with CamScanner

मानचित्र-1 : पश्चिम एशिया

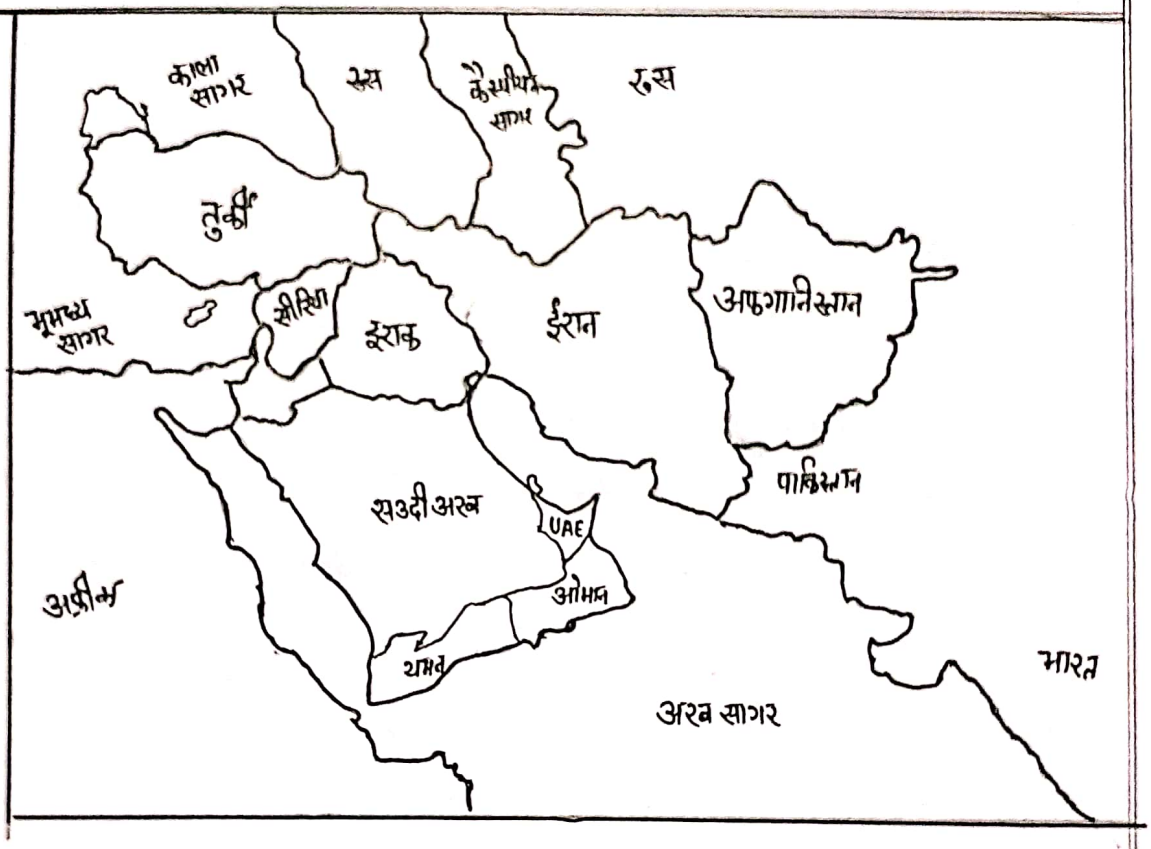

Scanned with CamScanner

इस समझौते में यह तय हुआ कि ईरान के दक्षिणी भाग पर ब्रिटेन का प्रभाव रहेगा तथा उत्तरी भाग पर रूस का प्रभाव रहेगा। मध्य ईरान दोनों साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए उभयनिष्ठ रहेगा अर्थात ईरान का मध्यक्षेत्र दोनों के लिए खुला रहेगा। वास्तव में, इस समझौते का सार यह था कि ईरान पर ब्रिटेन और रूस की संयुक्त श्रेष्ठता मान ली गई।

अब एक और महत्वपूर्ण देश अफगानिस्तान के विषय में इन दोनों साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच मामला तय होना बाकी था। गौरतलब है कि अफगानिस्तान के विषय में रूस ने यह मान लिया कि यह, हमारे दायरे से बाहर है। अब ब्रिटेन की बारी थी। ब्रिटेन ने अपनी अफगान नीति के तहत यह स्पष्ट किया कि जब तक अफगान राजा उसके प्रति वाफादार रहेगा तब तक उसका अधिग्रहण नहीं किया जाएगा।

इन समझौतावादी परिस्थितियों में मात्र 10 वर्ष बाद ही परिवर्तन देखने में तब आया जब रूस में 1917 में बोल्शेविक क्रांति के तहत नयी साम्यवादी सरकार सत्ता में आयी। इस नयी सरकार ने पहले के सभी साम्राज्यवादी संधियों की आलोचना की तथा एकतरफा घोषणा कर ईरान पर से अपने सारे दावे वापस कर लिये। बस क्या था! ब्रिटेन के लिए मैदान खाली था। उसने तेजी से सारे ईरान पर अधिकार जमा लिया।

कुछ समय बाद ईरान में तेल के भंडार का पता लगने के बाद अमेरिका की 'स्टैंडर्ड ऑयल' तथा ब्रिटेन की "ऐंग्लो-पर्शियन आयल कंपनी" का प्रभाव ईरान में बढ़ा। ईरान कहने को तो स्वतंत्र रहा, लेकिन उसका शोषण एक पराधीन देश की तरह हुआ।

गौरतलब है कि इस आलोच्य काल में शेष पश्चिम एशिया पर ऑटोमन साम्राज्य - तुर्की का अधिकार था। लेकिन तुर्की की लगातार बिगड़ती शासन-व्यवस्था के कारण जो विघटन की स्थिति पैदा हो गई थी उस वजह से उसे "यूरोप का मरीज" कहा जाने लगा था। इधर तेजी से साम्राज्यवादी रूझान प्रदर्शित करता हुआ एक देश 'जर्मनी' की नजर इस तुर्की पर टिक गई। जर्मनी की मंशा यह थी कि वह इस विघटित साम्राज्य के बिखरे कणों से साम्राज्यवादी आकांक्षा की पूर्ति कर सकता है। सो उसने सावधानी पूर्वक इस क्षेत्र में कदम बढ़ाने शुरू

mycompanion

Scanned with CamScanner

इसी बीच जर्मनी की एक कंपनी ने कुस्तुनतुनियां से बगदाद तथा फारस की खाड़ी तक रेल लाइन बिछाने का अधिकार हासिल कर लिया। जर्मनी को आशा थी कि वह इस रेल लाईन के सहारे इस क्षेत्र में ईरान तथा भारत तक अपने आर्थिक हितों को बढ़ा सकेगा। बस क्या था! जर्मनी की साम्राज्यवादी उत्कंठा का दूसरे यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों - "फ्रांस, रूस तथा ब्रिटेन" ने मिलकर विरोध किया। लेकिन इन क्षेत्रों का बँटवारा जर्मनी, फ्रांस तथा ब्रिटेन के बीच हुआ।

इसी बीच यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध का डंका बज उठा। अब स्थिति पूरी तरह से बदल गयी। समूचा यूरोप दो भागों - धुरी राष्ट्र और मित्र राष्ट्र" के बीच बँट गये। तुर्की जर्मनी के नेतृत्व में बने धुरी राष्ट्र में शामिल हो गया। गौरतलब है कि प्रथम विश्व युद्ध में धुरी राष्ट्र (जर्मनी, तुर्की और आस्ट्रिया) की हार हुई। इसका सबसे बुरा प्रभाव तुर्की अर्थात ऑटोमन साम्राज्य पर पड़ा। अब ऑटोमन साम्राज्य की बंदरबाँट शुरु हुई। मित्र राष्ट्रों में विजयी दो प्रमुख देश फ्रांस और ब्रिटेन ने आपसी सहमति से ऑटोमन साम्राज्य के पश्चिम एशिया के क्षेत्रों को बाँट लिया। सीरिया और लेबनान पर जहाँ फ्रांस का अधिकार कायम हुआ। वहीं फिलीस्तीन और इराक (मेसोपोटामिया) पर ब्रिटेन का अधिकार कायम हुआ। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) के उपरांत एक साम्राज्यवादी देश के रूप में जर्मनी का पश्चिम एशिया से सफाया हो गया।

जल्द ही तेल तथा तेल के संशाधनों पर अधिकार पाने की इन पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों में होड़ मच गई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिका की साम्राज्यवादी आकांक्षा हिलोरें मार रही थी। पश्चिम एशिया में स्थित तेल के संसाधनों की बंदरबाँट में वह भी शामिल हुआ। गौरतलब है कि ब्रिटेन तथा फ्रांस के साथ भागीदारी करके अमेरिकी तेल कंपनियों ने अरब में तेल संबंधी अधिकार पा लिये।

उपरोक्त विश्लेषण पश्चिम एशिया में उपनिवेशवाद की एक विस्तृत कहानी प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. एशिया का आधुनिक इतिहास - दीनानाथ वर्मा
2. आधुनिक विश्व का इतिहास - राजीव नयन प्रसाद
3. समकालीन विश्व का इतिहास - अर्जुन देव, इंदिरा अर्जुन देव
4. आधुनिक यूरोप का इतिहास - अनूप कुमार
5. आधुनिक यूरोप का इतिहास - घनपति पांडेय ।

Dr. Dayanand Mehta
(Assistant professor)
Deptt. of History
Samastipur, College, Samastipur
L. N. M. U. Darbhanga.

email : dayanandmehta@gmail.com

Mob : 9470200031
7250160031

mycompanion

Scanned with CamScanner